॥ॐ॥

।।ॐ श्री परमात्मने नमः।।

॥श्री गणेशाय नमः॥

श्री देवी सूक्त

विषय-सूची

देवीसूक्त 3

देवीसूक्त

[ऋग्वेद १०॥ १२५]

ऋग्वेदके दशम मण्डलका १२५वाँ सूक्त 'वाक्-सूक्त' कहलाता है। इसे 'आत्मसूक्त' भी कहते हैं। इसमें अम्भृण ऋषि की पुत्री वाक् ब्रह्मसाक्षात्कार से सम्पन्न होकर अपनी सर्वात्मदृष्टि को अभिव्यक्त कर रही हैं। ब्रह्मविद् को वाणीब्रह्म से तादात्म्यापन्न होकर अपने-आपको ही सर्वात्माके रूपमें वर्णन कर रही हैं। ये ब्रह्मस्वरूपा वाग्देवी ब्रह्मानुभवी जीवन्मुक्त महापुरुषको ब्रह्ममयी प्रज्ञा ही हैं। इस सूक्तमें प्रतिपाद्य-प्रतिपादकका ऐकात्म्य-सम्बन्ध दर्शाया गया है। भगवती पराम्बा के अर्चन-पूजन में 'देवीसूक्त' के पाठ का विशेष महत्त्व है:

ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः।
अहं मित्रावरुणोभा बिभर्त्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ॥१॥

मैं रुद्रों और वसुओं के साथ विचरण करती हूँ। मैं आदित्य और विश्वदेवों के साथ रहती हूँ। मैं मित्र और वरुण को धारण करती हूँ। इंद्र, अग्नि और दोनों अश्विनीकुमारों को मैं ही धारण करती हूँ। ॥१॥

अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते ॥२॥

मैं शत्रुहंता सोम को धारण करती हूँ। त्वष्टा पूषा और भग को धारण करती हूँ। मैं अन्न आदि हविष्य पदार्थ वाले, उत्तम हवियों से देवों को तृप्त करने वाले और सोमरस अभिषन करने वाले यजमान को यज्ञफलरूप धन प्रदान करती हूँ। ॥२॥

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्य्यावेशयन्तीम् ॥३॥

मैं ही समस्त जगत की स्वामिनी, धन प्रदान करने वाली हूँ। यज्ञ किये जाने वाले देवों में मुख्य और ज्ञानवती हूँ। सम्पूर्ण प्रपंच के रूप में मैं ही अनेक प्रकार की होकर विराजमान हूँ। सम्पूर्ण प्राणियों के शरीर में जीवरूप में मैं अपने आप को ही प्रविष्ट कर रही हूँ। भिन्न-भिन्न देश, काल, वस्तु और व्यक्तियों में जो कुछ हो रहा है, किया जा रहा है, वह सब मुझमें मेरे लिये ही किया जा रहा है। सम्पूर्ण विश्व के रूप में अवस्थित होने के कारण जो कोई जो कुछ भी करता है, वह सब मैं ही हूँ ॥३॥

मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्।
अमन्तवो मां त उपक्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि ॥४॥

जो कोई भोग भोगता है, वह मेरी ही शक्ति से भोगता है। जो भी देखता है, जो श्वास प्रवास के रूप में श्वास लेता है और जो कही हुई बात सुनता है, वह भी मेरी ही शक्ति है। जो इस प्रकार अंतर्यामी रूप से स्थित मुझे नहीं जानते, वे अज्ञानी दीन, हीन, क्षीण हो जाते हैं। मेरे प्यारे सखा ! मेरी बात सुनो-मैं तुम्हारे लिये उस ब्रह्मात्मक वस्तु का उपदेश करती हूँ, जो श्रद्धा-साधन से उपलब्ध होती हैं ॥४॥

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः ।
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमुषिं तं सुमेधाम् ॥५॥

मैं स्वयं ही इस ब्रह्मात्मक वस्तु का उपदेश करती हूँ। देवताओं और मनुष्यों ने भी इसी का सेवन किया हैं। मैं स्वयं ब्रह्मा हूँ। मैं जिसकी रक्षा करना चाहती हूँ, उसे सर्वश्रेष्ठ बना देती हूँ, मैं चाहूँ तो उसे सृष्टिकर्ता ब्रह्मा बना हूँ, अतीन्द्रियार्थ ऋषि बना हूँ और उसे बृहस्पति के समान सुमेधा बना दें। मैं स्वयं अपने स्वरूप ब्रह्मभिन्न आत्मा का गान कर रही हूँ ।। ५ ।।

अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश ॥६॥

मैं ही ब्रह्मज्ञानियों के द्वेषी हिंसारत त्रिपुरवासी, त्रिगुणाभिमानी अहंकार असुर का वध करने के लिये संहारकारी रुद्र के धनुष पर ज्या (प्रत्यंचा) चढ़ाती हूँ। मैं ही अपने जिज्ञासु स्तोताओं के विरोधी शत्रुओं के साथ संग्राम करके उन्हें पराजित करती हूँ। मैं ही द्युलोक और पृथिवीमें अंतर्यामी रूप से प्रविष्ट हूँ ॥६॥

अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन् मम योनिरस्वन्तः समुद्रे।
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामू द्यां वषर्मणोप स्पृशामि ॥७॥

मैं इस जगत के शीर्ष स्थान में स्थित द्युलोक को उत्पन्न करती हूँ। मेरा उत्पत्ति स्थान समुद्र के जल में है, परमेश्वर की बुद्धि में है। उसी स्थान से मैं सारे संसार को व्याप्त करती हूँ। और मैं ही इस महान अंतरिक्ष को अपने उन्नत देह से स्पर्श करती हूँ। कारणभूत मैं कल्याणमय होकर समस्त जगत को व्याप्त करती हूँ। ॥७॥

अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव ॥८॥

जैसे वायु किसी दूसरेसे प्रेरित न होनेपर भी स्वयं प्रवाहित होता है, उसी प्रकार मैं ही किसी दूसरेके द्वारा प्रेरित और अधिष्ठित न होनेपर भी स्वयं ही कारणरूपसे सम्पूर्ण भूतरूप कार्यों का आरम्भ करती हूँ। मैं आकाश से और इस पृथ्वी से भी श्रेष्ठ, अपने महान सामर्थ्य से प्रकट होती हूँ । ॥ ८॥

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।